सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक - 98

श्री साई शके : 28
अगस्त – 2010

।। ॐ ।।

।। ॐ श्री साईनाथाय नमः।।

।। ॐ श्री सद्गुरूनाथ दादाय नमः।।

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
" Sai Niketan"
5,Jasola Vihar
New Delhi - 110025
Ph : 26955261
E - mail : saikalp@gmail.com
Dadab6@gmail.com
Web : saishraddha-world.com

Patron
Lalita Bhavani Shankar Bhatte

Editorial
Vijay Kumar Verma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly - Rs. 100.00
Life Time - Rs. 500.00

Overseas
Yearly - US$ 50.00
Life Time - US$ 200.00

Printed By
Shaarp Advertising
Cell : 09810284136

Published Every Month

©All rights reserved with the Publisher

ॐ

गुरूबंधू , भागिनीयों को, गुरूमार्ग में विकास कर लेने का सूत्र वं॰ दादाजी ने गुरूप्रसाद के शुरू में ही लिखा हैं। वह ये की "गुरूमार्ग दर्शन" के अनुसार झुक कर आचरण करना। मतलब गुरूमार्ग में बर्ताव नहीं है, पर सिर्फ झुकना है। यह गुरूमार्ग एक ब्रम्हवाक्य है। इसमें 'झुकना' मतलब – विनम्रता, आदरयुक्त भक्ति, सेवाभाव, यह सूचित करना है, लेकिन कौन से माध्यम से यह भाव प्रकट होना उद्येश्यपूर्ण है ? मतलब हमें कमर से झुकना चाहिए या गर्दन से झुकना चाहिए या फिर मन से झुकना चाहिए ? तो गुरूमार्ग में झुकना यह प्रमुख रूप से जुबान के लिए कहा गया है। जुबान का इस्तेमाल किसी तेज अथवा धारदार शस्त्र से प्रहार जैसा करने के लिए हो सकता है और नरमाई से किसी दुःखी व्यक्ति के मर्मो पर मलहम लगाने के लिए भी हो सकता है । हम आज गुरूमार्गी होने पर अपनी जुबान का इस्तेमाल किस प्रकार करते है या फिर जुबान किस प्रकार और कितनी झुकाते हैं ? जुबान झुकाकर गुरूमार्ग में विकास किस प्रकार होता है, इसका शास्त्रिय रूप से हम विचार करें। आत्मिक शक्ति या गुरूभक्ति हमारे शरीर में जो अनगिनत हार्मोन्स हैं, उनके माध्यम द्वारा कार्यान्वित होती है।

यह हार्मोन्स पूरे शरीर में बिखरे हुए होते है और उनकी तीव्रता सबसे ज्यादा जुबान पर होती है। यह सब हार्मोन्स एक दुसरे से संबंधित होते है, मतलब गुरुशक्ति कार्यान्वित करने के लिए जैसे – जैसे शरीर के अन्य हार्मोन्स विकसित होते जाते है, वैसे जुबान पर के हार्मोन्स का भी विकास होता है और उसी प्रकार इसका उल्टा भी सत्य है (vice varsa) । हम सामान्य लोग जुबान के 25 प्रतिशत से भी कम हार्मोन्स का उपयोग करते है या विकसित कर लेते है और वो भी सिर्फ पसंदीदा खाने की चीजों की वजह से । कोई मन – पसंद खाने की चीज सामने आई या उसके बनाने का तरीका किसी ने बताया या सिर्फ उसका ख्याल भी आया, तो भी जुबान पे/ मुंह मे पानी आता है। मतलब जुबान के हार्मोन्स जागरूक होते है। उसी प्रकार कोई दुःखी व्यक्ति दिखाई दिया और उसके कल्याण के लिए सद्गुरु का नाम :– स्मरण किया तो शरीर के अनगिनत हार्मोन्स के जागरूक होने से उसमें गुरुशक्ति का खुद व खुद उपयोग होता है। यह अर्थ वं॰ दादाजी का एक शेर बनाता है :–

"याद आती है एक दर्द मचाती,
सोये हुए सागर को ही तुफान मचाती।।"

मतलब गुरु की याद आयी, उनका नाम लिया तो गुरुशक्ति कार्यान्वित करने के लिए (धारणा या उसे प्रवाहित करने के लिए) देह में तुफान आना चाहिए ।

जुबान के हार्मोन्स के विकास से शरीर के अन्य हार्मोन्स का विकास कर लेने के लिए जुबान को झुकाने की आदत लगानी चाहिए और उसी उद्देश्य से पुरातन काल से छोटे बच्चो से स्त्रोत पाठन करवाना, गुरुनामः – स्मरण करवाना यह आदत लगाते थे। उसी प्रकार आज भी अपने कार्य केंन्द्रो पर छोटे बच्चों को ज्ञानसंवेदना वर्ग में पहले श्लोक सिखाये जाते है और फिर जैसे – जैसे जुबान झुकने लगती है, मतलब हार्मोन्स जागरूक होते है वैसे – वैसे ऊँकार साधना सिखाई जाती है ।

आगे फिर जब जुबान के 50 प्रतिशत से ज्यादा हार्मोन्स विकसित होते है, तब जुबान का स्थित्यंतर 'जिव्हा' इस संज्ञा में होता है । जुबान की 'जिव्हा' हुई, की फिर बातो में से जो प्रेम प्रकट होता है, वह 'जिव्हाक्याचे प्रेम', जो आपस में बना रहे ऐसी बिनती हम दैनं – दिन प्रार्थना में हर रोज करते है, लेकिन उसके लिए हमारी जुबान का स्थित्यंतर 'जिव्हा' में करने का कितना प्रयास हम करते है ? फिर आगे 'जिव्हा' का विकास 100 प्रतिशत होने पर उसका स्थित्यंतर रसना यह संज्ञा में होता है। उस रसना से किया हुआ एक सद्गुरु नाम :– स्मरण भी दुखी व्यक्ति का संकट निवारण करके उसे समाधान की प्राप्ति कर देता है। यह विकास कर लेने की सिद्धता बं॰ दादा जी ने इस कार्य में की हुई है और वह इंतजार कर रहे है कि :–

"तू करी उच्चरना, रसने सद्गुरुनामः स्मरणा।
जप तप साधन का ही न लगे, नामची अध्यसंहरणा।।"

इस रचना में जिस शब्द का उच्चारण होता है, वह ब्रम्हरुप प्राप्त करना है । 'शब्दब्रम्ह' का मतलब क्या है, जिसकी सिद्धता बं॰ दादाजी ने श्री पंत महाराज जी

से प्राप्त करके जिस कार्य में की है, उसका विचार करें।

जिस प्रकार जुबान की जिव्हा और जिव्हा की रचना होती है उसी प्रकार शरीर के अन्य हार्मोन्स का भी स्थित्यंतर होकर पारमार्थिक अवस्थाओं की प्राप्ति होती है । यह पारमार्थिक अवस्था मतलब साधक – सिद्ध और साध्य है। पहली अवस्था में मतलब साधक अवस्था मे शरीर के पंचमहाभूत तत्वों का विकास होकर जिस शब्द का उच्चारण होना है, वह पंचमहाभूत तत्वों से निर्मित इहलोक में कार्यान्वित होता है । इस अवस्था का विकास होते समय हम सभी लोगो ने अनुभव किया होगा की व्यवहार के अन्य परिचित व्यक्ति उनके देहिक दुःख हमसे कहना पसंद करते है और हमारे दो समाधानकारक शब्दो की अपेक्षा करते है । जैसे — जैसे हमारा यह विकास गुरू कृपा से प्राप्त होगा वैसे– वैसे हमारे शब्द के उच्चारण से समाधान की प्राप्ति होगी ।

आगे की अवस्था में पंचप्राण कोशो का मतलब अन्नमय कोश, मनोमय कोश, प्राणमय कोश, विज्ञानमय कोश और आनंदमयकोशों का विकास प्राप्त होकर उस अवस्था का उच्चारण / शब्द दो लोको में मतलब इहलोक और परलोक में कार्यान्वित होता है ।

इसके आगे की अवस्था में तन्मात्रों का विकास होना आवश्यक होता है । इसके लिए त्रिगुणात्मक शक्ति यानी दत्त शक्ति की धारणा होना आवश्यक है । पंच तन्मात्र मतलब — गंध, रस, रूप, स्पर्श और शब्द है। इस पारमार्थिक अवस्था का लाभ होना बहुत मुश्किल है। बहुतांशी साधक यह अवस्था प्राप्त करने के लिए त्रिगुणात्मक शक्ति की उपासना सन्यास और वैराग्य मार्ग से करने का प्रयास करते है । आने वाले समय में यह असाधारण अवस्था सुलभता से प्राप्त कर देने के लिए श्री पंत महाराज जी ने 'शब्दब्रम्ह' की सिद्धता इस कार्य मे करके दी है । त्रिगुणात्मक शक्ति जो प्रमुख रूप से आकाश तत्व मे है, उस तत्व का तन्मात्र – शब्द जिसका विकास करके उस अवस्था की प्राप्ति करने का सूत्र और उसकी सिद्धता वं॰ दादाजी ने पंतमहाराज जी से प्राप्त की। जिससे जैसे – जैसे शब्द तन्मात्र का विकास होता है, वैसे – वेसे बाकी चार तन्मात्र, शब्द तन्मात्र में विलिन होने लगती है । फिर उस शब्द के उच्चारण में – रस मतलब प्रेम, स्पर्श मतलब मन को छू जाना, गंध मतलब (हवा हवासा बाँटना – वास – हमेशा रहना – उसकी हमेशा के लिए चाह पैदा होना) और रूप मतलब ईश्वरी शक्ति का स्वरूप, आदि भाव प्रकट होते है। इस अवस्था में मतलब तन्मात्रों का विकास होने पर किया हुआ शब्द का उच्चारण तीनों लोकों में यानी इहलोक, परलोक और ब्रम्हलोक मे कार्यान्वित होना है । इस अवस्था में सदिच्छा प्रकट किया, तो दुःखी व्यक्ति का कर्म किसी भी लोक में या कौन सी भी स्थिती में हुआ तो भी उसकी गती अनुकूल होकर उस व्यक्ति को समाधान की प्राप्ति होती

है। इस अवस्था का शब्द का मतलब 'शब्दब्रम्ह' है। यह पारमार्थिक विकास होते समय शास्त्र के अनुसार प्रथमतः अपने वाचा को आकार प्राप्त होकर वैखरी वाणी को लाभ होता है। फिर आगे उसका स्थित्यंतर क्रमशः मध्यमा और फिर पश्यंती वाणी में होता है । परा वाणी यह पश्यंती वाणी से श्रेष्ठ होकर, वह ईश्वर की वाणी है, मतलब ब्रम्हांड शक्ति के संकेत यह 'परा' वाणी से प्रकट होता है ।

वं॰ दादा जी ने इस कार्य में 'शब्दब्रम्ह' की सिद्धता आरती साधना में करते समय उसमें नाथ परंपरा के विमोचन भी अंतर्भूत किये है । जिससे हमारे जैसे सामान्य भक्तों का विकास अपने संकट निवारण करने से या अपने कर्म के दोषो का निवारण करने से पारमार्थिक उच्चावस्था मतलब शब्दब्रम्ह की प्राप्ति होने तक कोई भी प्रखर साधन, उपासना या तपःश्चर्या न करते हुए सिर्फ आरती साधना, ऊँकार साधना और आचरण इसमे से साध्य करके दी है । वं॰ दादाजी ने हमे सबसे श्रेष्ठ वाणी सिद्ध कर दी है, वह – 'गुरूवाणी', जिससे शास्त्रों के अनुसार वाणी का स्थित्यंतर न करते हुए हम उस कार्य मे मतलब गुरु मार्ग में जैसै – जैसे एकरूप हो जाये, वैसे – वैसे हमारी वाचा से गुरूवाणी प्रकट होगी । जब यह गुरूवाणी पूर्णतः प्रगट होगी वही असली (Actual) गुरूपुर्णिमा है । इसकी प्राप्ति करके अखंड रूप से भजन करना मतलब गुरूपुर्णिमा का उत्सव मनाना । भजन मतलब जनों को भजना, मतलब सेवा करना । ऐसी गुरूपुर्णिमा हम सभी के जीवन में श्री गुरूकृपा से जल्दी से जल्दी मनायी जाए, यह वं॰ दादा जी और परम पूज्यनीय साईबाबा, इनके चरणों में प्रार्थना है।

"गुरू महाराज वाणी,मन, दया, अखंड भजन करू।
जय जय गुरूमहाराज गुरू जय जय..." ।।

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरूबंधू एवं भागिनीयों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" की अगली अंक एवं अन्य कार्यक्रम की सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित किया जाएगा।

अतः आप सभी गुरूबंधू एवं भागिनीयों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई – मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :–

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

" Sai Niketan"
5, Jasola Vihar, New Delhi -1100 25
Telephone : 26955261
E - mail : saikalp@gmail.com
Dadab6@gmail.com

।। शुभम् भवतु।।
। जन्म जन्म का सेवक।
।। श्री साईकल्प आध्यात्म संस्था।।